

III. बाह्य अर्थव्यवस्था

सात क्रमिक तिमाहियों के घाटे के पश्चात, भारत के भुगतान संतुलन (बीओपी) के चालू खाते में 2008-09 की अंतिम तिमाही में 4.7 बिलियन अमरीकी डॉलर का अधिशेष दर्ज हुआ। वर्ष की तीसरी तिमाही में शुरू हुए निवल बहिर्वाहों के अनुसार पूंजी खाते पर दबाव चौथी तिमाही के दौरान भी जारी रहा। कुल मिलाकर वर्ष के लिए, निवल पूंजी प्रवाह 2007-08 के 108.0 बिलियन अमरीकी डॉलर से घटकर 2008-09 में 9.1 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया, जबकि इसी अवधि के दौरान चालू खाता घाटा जीडीपी के 1.5 प्रतिशत से बढ़कर जीडीपी का 2.6 प्रतिशत हो गया। बिना किसी असाधारण उपाय का सहारा लिए, भारत के भुगतान संतुलन पर गंभीर बाह्य आघातों के प्रभाव का केवल 20.1 बिलियन अमरीकी डॉलर (मूल्यांकन का निवल) विदेशी मुद्रा की हानि के रूप में हुआ। पूंजी खाते के कतिपय संकेतकों संबंधी उपलब्ध नवीनतम जानकारी से पता चलता है कि 2009-10 से अब तक भारत की ओर पूंजी प्रवाह में सुधार आएगा।

III.1 2008-09 की चौथी तिमाही के दौरान लंबे समय से जारी वैश्विक मंदी के कारण प्रतिकूल बाह्य परिवेश, वैश्विक व्यापार में संबद्ध कमी और पूंजी प्रवाह के स्वरूप में विपर्ययन ने भारत के बीओपी को प्रभावित करना जारी रखा। वैश्विक आर्थिक मंदी का प्रभाव 2008-09 की तीसरी तिमाही में शुरू हुए निर्यात की ऋणात्मक वृद्धि में परिलक्षित हुआ तथा यह चौथी तिमाही के दौरान और मुखर हो गया। पूंजी प्रवाह चैनल के माध्यम से संक्रमण का प्रेषण पूंजी खाते के निवल बहिर्वाहों में स्पष्ट रूप से दिखा, जिसमें चौथी तिमाही के बहिर्वाह तीसरी तिमाही में दिखे स्तर से अधिक थे। 2009-10 के दौरान अब तक पूंजी प्रवाह में पुनरुज्जीवन के संकेत हैं। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार मार्च 2009 के अंत के 252 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 17 जुलाई 2009 को 266 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया।

अंतरराष्ट्रीय गतिविधियां

III.2 समकालिक वैश्विक आर्थिक मंदी संभावनाओं को मंद कर रही है, इस तथ्य के बावजूद कि मंदी की गति काफी अधिक कमजोर हुई है और संकट से बाहर निकलने के प्रायोगिक चिह्न मौजूद हैं। वैश्विक सुधार का समय और गति अनिश्चित बनी हुई है तथा प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से प्राप्त अनुमान निकट भविष्य में किसी तेज सुधार की बात नहीं करते हैं। 2009 के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) के वृद्धि संभावना के हालिया क्रमिक संशोधन निम्नगामी दिशा में बने हुए हैं। 8 जुलाई 2009 को आइएमएफ द्वारा जारी वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक (डब्ल्यूईओ) के अनुसार, विश्व अर्थव्यवस्था के मंदी में बने रहने का अनुमान लगाया गया है, जिसने 2009 के दौरान - 1.4 प्रतिशत (क्रय शक्ति समता भार पर जीडीपी) की वृद्धि दर्ज की।

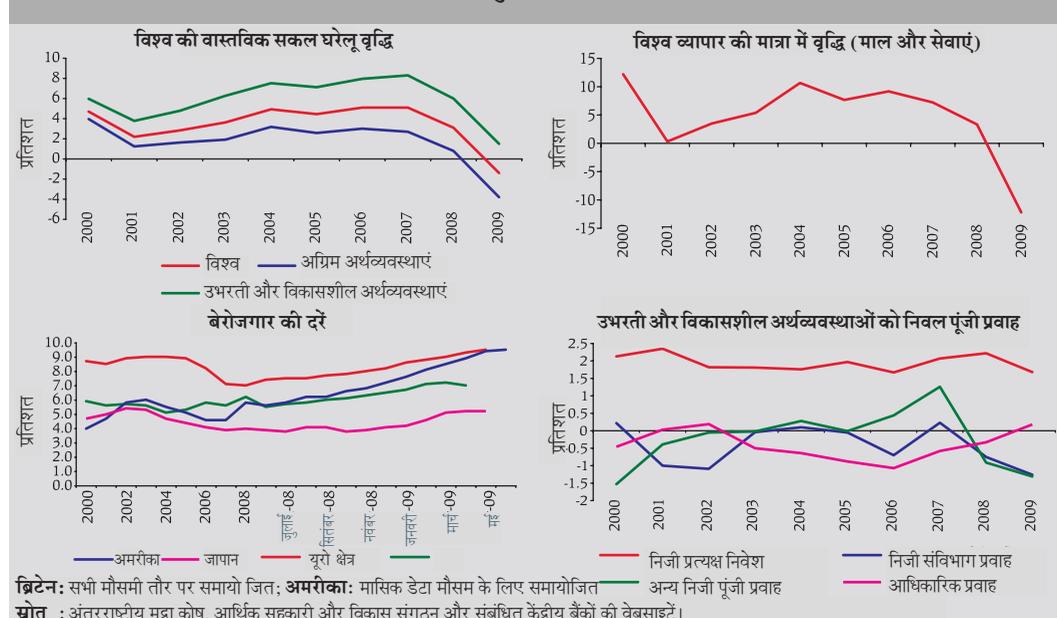
III.3 जून 2009 में जारी विश्व बैंक के ग्लोबल डेवलपमेंट फायनेंस के अनुसार, वैश्विक जीडीपी (बाजार

विनिमय दर पर) 2009 में 2.9 प्रतिशत कम हो सकती है, जिसमें 2010 में 2.0 प्रतिशत और 2011 में 3.2 प्रतिशत का मामूली सुधार होगा। ओईसीडी इकोनॉमिक आउटलुक (जून 2009) के अनुसार, वित्तीय दशाएं हाल में कुछ अच्छी होने के बावजूद कठोर रहीं और मंदी के 2009 की दूसरी छमाही तक निम्न स्तर पर पहुंचने की संभावना है, इसके पश्चात इसमें संभावित धीमा सुधार होगा।

III.4 वैश्विक वित्तीय संकट ने विभिन्न चैनलों के माध्यम से विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। विश्व भर में वृद्धि में गिरावट और व्यापार में कमी के अलावा, उन्नत अर्थव्यवस्थाएं बढ़ती बेरोजगारी दरों से प्रभावित हुई जिससे रोजगार को भारी नुकसान हुआ, जबकि उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) को पूंजी प्रवाह में काफी अधिक विपरीत स्थिति का सामना किया (चार्ट 6)।

III.5 वैश्विक वित्तीय संकट से उभरे विश्व अर्थव्यवस्था की धीमी होती वृद्धि की गति ने विश्व पण्य

चार्ट 6: प्रमुख वैश्विक संकेतक



व्यापार पर प्रभाव डालना जारी रखा। आइएमएफ के अनुमानों (जुलाई 2009) के अनुसार, विश्व व्यापार की मात्रा (माल और सेवाएं) के 2008 के 2.9 प्रतिशत वृद्धि से 2009 में 12.2 प्रतिशत सिकुड़ने की आशा है (सारणी 15)। विश्व पण्य निर्यात में नवंबर 2008 से

देखी गई मंदी 2009 के दौरान जारी रही जिसमें पहले दो महीनों में सबसे तेज गिरावट हुई। आइएमएफ की अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सांख्यिकी के अनुसार, 2009 के दौरान (जनवरी-फरवरी) विश्व पण्य निर्यात (डॉलर में) में तीव्र ऋणात्मक वृद्धि (- 29.3 प्रतिशत) हुई,

सारणी 15 : चुनिंदा आर्थिक संकेतक - विश्व

मद	2007	2008	2009अनु.	2010अनु.
1	2	3	4	5
I. वैश्विक उत्पादन (प्रतिशत परिवर्तन) #	5.1	3.1	-1.4	2.5
	(3.8)	(2.0)	(-2.6)	(1.7)
i) विकसित अर्थव्यवस्थाएं	2.7	0.8	-3.8	0.6
ii) अन्य उभरते बाजार और विकासशील देश	8.3	6.0	1.5	4.7
जिनमें से : विकासशील एशिया	10.6	7.6	5.5	7.0
भारत	9.4	7.3	5.4	6.5
II. उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति (प्रतिशत)				
i) विकसित अर्थव्यवस्थाएं	2.2	3.4	0.1	0.9
ii) अन्य उभरते बाजार और विकासशील देश	6.4	9.3	5.3	4.6
III. निवल पूंजी प्रवाह (बिलियन अमरीकी डॉलर)*				
i) निवल निजी पूंजी प्रवाह (क+ख+ग) **	617.5	109.3	-190.3	-6.5
क) निवल निजी प्रत्यक्ष निवेश	359.0	459.3	312.8	303.1
ख) निवल निजी संविभागीय निवेश	39.5	-155.2	-234.5	-195.3
ग) निवल अन्य निजी पूंजी प्रवाह	219.2	-194.6	-268.5	-114.2
ii) निवल आधिकारिक प्रवाह	-100.5	-60.0	57.6	-28.1
IV. वैश्विक व्यापार @				
i) व्यापार मात्रा	7.2	2.9	-12.2	1.0
ii) निर्यात मात्रा	6.1	1.8	-13.5	0.5
iii) व्यापार मूल्य अपस्फीतिकारक	8.0	11.5	-14.6	2.6
V. चालू खाता शेष (जीडीपी की तुलना में प्रतिशत)				
i) अमरीका	-5.3	-4.7	-2.8	-2.8
ii) चीन	11.0	10.0	10.3	9.3
iii) भारत	-1.0	-2.8	-2.5	-2.6
iv) मध्य - पूर्व	18.2	18.8	-0.6	3.2

अनु.: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान

: वृद्धि दरें क्रय शक्ति समानता आधारित विनिमय दरों पर हैं। कोष्ठकों के आंकड़े बाजार विनिमय दरों पर वृद्धि दरें हैं।

* : उभरते बाजार और विकासशील देशों की ओर निवल पूंजी प्रवाह।

** : आंकड़ों की परिमितता के कारण 'निवल निजी पूंजी प्रवाह' के अंतर्गत कतिपय आधिकारिक प्रवाह भी शामिल हो सकते हैं।

@ : सामान और सेवाओं के वैश्विक निर्यात और आयात के वार्षिक प्रतिशत परिवर्तन का औसत।

स्रोत: वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक अप्रैल 2009 वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक अपडेट जुलाई 2009, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष।

सारणी 16 : निर्यात में वृद्धि - वैश्विक परिदृश्य

(प्रतिशत)				
क्षेत्र / देश	2007	2008	2008	2009
	जनवरी-दिसंबर		जनवरी-मार्च	
1	2	3	4	5
1. विश्व	13.9	14.3	22.2	-29.1
2. उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	13.5	11.3	19.6	-30.3
अमरीका	12.0	11.9	17.1	-22.4
फ्रांस	12.3	9.8	21.3	-31.5
जर्मनी	18.0	10.8	21.1	-31.3
जापान	7.8	12.3	28.7	-41.8
3. उभरती और विकास-शील अर्थव्यवस्थाएं	14.7	21.1	26.9	-27.9*
सिंगापुर	10.1	13.0	21.2	-32.7
चीन	25.6	17.3	21.3	-17.5*
भारत	23.3	19.7	37.7	-24.4
इंडोनेशिया	14.7	24.4	29.2	-30.9
कोरिया	14.1	13.6	17.4	-24.9
मलेशिया	9.6	19.1	19.1	-28.8
थाईलैंड	17.0	12.9	21.3	-21.7

* : जनवरी 2008 की तुलना में जनवरी 2009 से संबंधित।

स्रोत: 1. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (www.imfstatistics.org)

2. भारत के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

इसके विपरीत एक वर्ष पहले (23.9 प्रतिशत) की तदनु रूप अवधि के दौरान काफी अधिक वृद्धि हुई। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के निर्यात में 31.3 प्रतिशत (एक वर्ष पहले 23.0 प्रतिशत) की गिरावट आई, जबकि उभरती

और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के निर्यात में जनवरी 2009 में 27.3 प्रतिशत की कमी आई (एक वर्ष पहले 26.9 प्रतिशत वृद्धि) (सारणी 16)।

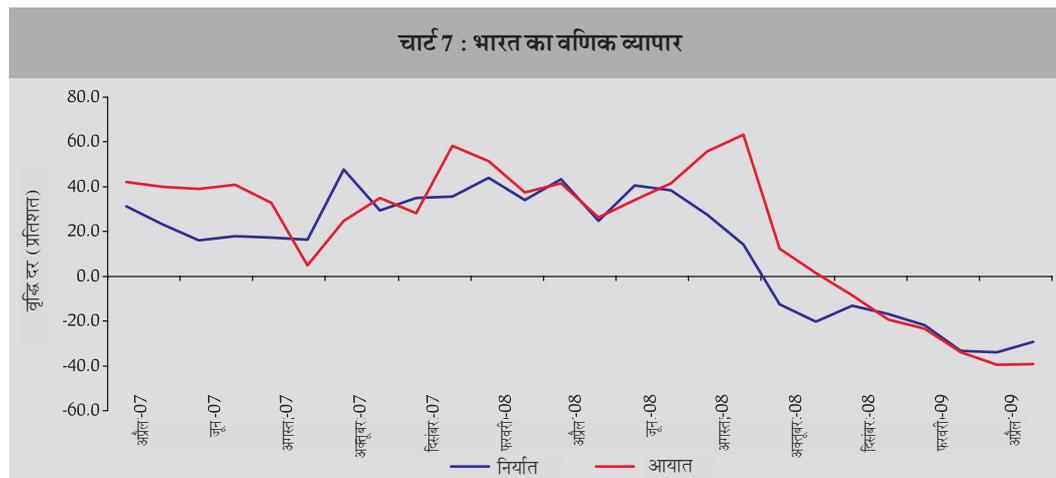
पण्य व्यापार

निर्यात

III.6 व्यापार चैनल के द्वारा संक्रमण का प्रभाव - पहली गिरावट के बाद और इसके पश्चात निर्यात निष्पादन में कमी के माध्यम से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। निर्यात में अक्टूबर 2008 से क्रमिक आठ महीनों के लिए माह-दर-माह आधार पर गिरावट हुई (चार्ट 7)। वर्ष की दूसरी छमाही के दौरान घरेलू वृद्धि और आर्थिक गतिविधियों में आते धीमे पन के कारण आयात में तीव्र गिरावट दिखी।

III.7 निर्यात की संघटना में, 2008-09 (अप्रैल-फरवरी) के दौरान विनिर्मित माल का हिस्सा 65.9 प्रतिशत के साथ विशाल बना रहा, इसके पश्चात पेट्रोलियम उत्पाद और प्राथमिक उत्पाद थे। अभियांत्रिकी वस्तुओं को छोड़कर, सभी प्रमुख वस्तु समूहों में भारी गिरावट दिखी (सारणी 17)।

चार्ट 7 : भारत का वणिज्य व्यापार



सारणी 18: भारत के निर्यात की दिशा						
समूह / देश	बिलियन अमरीकी डॉलर			घटबढ़ (प्रतिशत)		
	2007-08	2007-08 सं.	2008-09 अ	2007-08	2007-08	2008-09
		अप्रैल-फरवरी	अप्रैल-फरवरी		अप्रैल-फरवरी	
1	2	3	4	5	6	7
1. ओईसीडी देश	62.6	57.2	60.1	20.4	20.2	5.1
जिसमें से :						
क) ईयू	32.9	30.6	34.1	27.6	27.5	11.4
ख) उत्तरी अमरीका	22.0	19.8	19.7	10.0	10.4	-0.9
यूएस	20.7	18.7	18.4	9.8	10.2	-1.6
2. ओपेक	26.7	23.9	29.6	28.8	26.7	24.1
जिसमें से :						
यूएई	15.6	14.0	16.6	29.9	29.3	18.0
3. विकासशील देश	69.6	60.5	60.2	37.1	33.6	-0.5
जिसमें से :						
एशिया	51.5	45.0	44.5	36.9	33.0	-1.0
पोपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना	10.8	9.5	7.7	30.6	27.1	-18.1
सिंगापुर	7.4	6.4	7.3	21.4	17.3	13.0
4. कुल निर्यात	163.1	143.6	153.0	29.0	26.6	6.6

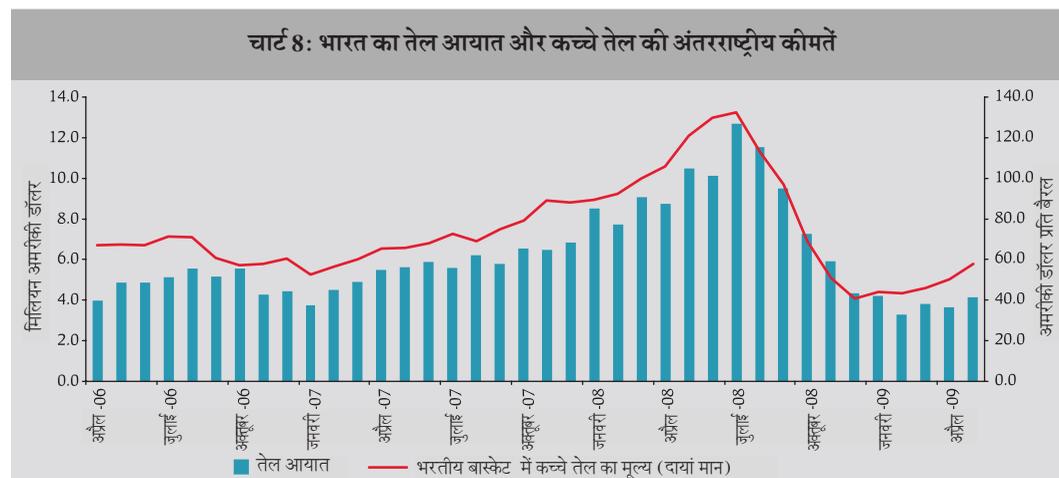
सं: संशोधित अ: अनंतिम
स्रोत : वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

गिरावट से प्रेरित थी। लेकिन, इस अवधि के दौरान मोती, कीमती और कम मूल्यवान पत्थर तथा खाद्य तेल में उच्चतर वृद्धि हुई (सारणी 19)।

III.11 आयात के स्रोत के अनुसार, ओपेक के पास सर्वाधिक हिस्सा (33.2 प्रतिशत) था, इसके पश्चात 2008-09 (अप्रैल-फरवरी) के दौरान विकासशील देश

और ओईसीडी के देश थे। चीन आयात का एकल सबसे बड़ा स्रोत बना रहा, जिसका कुल आयात में 10.7 प्रतिशत हिस्सा था।

III.12 भारत का वाणिज्यिक व्यापार घाटा 2007-08 में जीडीपी के 7.5 प्रतिशत से बढ़कर 2008-09 में 10.1 प्रतिशत हो गया। लेकिन, पिछले वर्ष की तदनुसू



सारणी 19 : प्रमुख वस्तुओं का आयात						
समूह / देश	बिलियन अमरीकी डॉलर			घटबढ़ (प्रतिशत)		
	2007-08	2007-08 सं.	2008-09अ	2007-08	2007-08	2008-09
	अप्रैल-फरवरी			अप्रैल-फरवरी		
1	2	3	4	5	6	7
पेट्रोलियम, पेट्रोलियम उत्पाद और संबंधित सामग्री	79.7	70.6	86.4	39.5	35.3	22.4
खाद्य तेल	2.6	2.4	3.2	21.4	24.2	32.8
लोहा और इस्पात	8.7	8.0	8.8	35.3	40.3	9.7
पूँजीगत वस्तुएं	70.8	52.7	58.0	50.5	39.3	10.2
मोती, मूल्यवान और कम मूल्यवान रत्न	8.0	7.2	12.8	6.5	9.4	76.5
रसायन	9.9	9.1	11.4	26.5	27.5	25.4
सोना और चांदी	17.9	16.4	18.0	22.0	24.9	10.1
कुल आयात	251.7	216.2	263.3	35.5	33.1	21.8
ज्ञापन :						
गैर तेल आयात	171.9	145.7	176.9	33.7	32.0	21.4
सोने और चांदी को छोड़कर गैर तेल आयात	153.9	129.3	158.9	35.1	33.0	22.9
मुख्यतः औद्योगिक आयात*	141.7	117.1	139.1	35.4	30.8	18.7
सं: संशोधित अ: अनंतिम						
* : सोना और चांदी, थोक उपभोक्ता माल, विनिर्मित उर्वरक और विशेषज्ञों के काम आने वाले उपकरणों की राशि को घटाकर गैर तेल वस्तुओं के आयात।						
स्रोत : वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।						

अवधि की तुलना में 2009-10 (अप्रैल-मई) के दौरान वाणिज्यिक व्यापार घाटा कम हो गया, जो निर्यात के सापेक्षिक आयात में तीव्र कमी को दर्शाता है।

भुगतान संतुलन

चालू खाता

III.13 2008-09 के दौरान, भुगतान संतुलन आधार पर निर्यात वृद्धि 2007-08 की 28.9 प्रतिशत की उच्च वृद्धि से घटकर 5.4 प्रतिशत हो गई। आयात वृद्धि भी इसी अवधि के दौरान 35.2 प्रतिशत से तेजी से घटकर 14.3 प्रतिशत हो गई। परिणामस्वरूप, भुगतान संतुलन आधार पर, व्यापार घाटा 2007-08 में जीडीपी के 7.8 प्रतिशत से बढ़कर 2008-09 में जीडीपी का 10.3 प्रतिशत हो गया। 2008-09 की तीन लगातार तिमाहियों में घाटा दर्ज करने के पश्चात, कमजोर वैश्विक मांग दशाओं के निरंतर जारी रहने के बावजूद पिछली तिमाही में बीओपी में चालू खाता अधिशेष हो गया। 2008-09 की तीसरी तिमाही के दौरान शुरू हुई निर्यात में

सारणी 20 : भारत का वणिज्यिक व्यापार			
(बिलियन अमरीकी डॉलर)			
मद	2008-09सं.	2008-09 सं.	2009-10 अ
		अप्रैल-मई	
1	2	3	4
निर्यात	168.7	31.6	21.8
तेल	24.9 *	5.5	..
तेल से भिन्न	128.1 *	26.1	..
आयात	287.8	51.5	32.0
तेल	93.2	19.2	7.8
तेल से भिन्न	194.6	32.3	24.2
व्यापार संतुलन	-119.1	-19.9	-10.2
तेल से भिन्न वस्तुओं का व्यापार संतुलन	..	-6.1	..
घटबढ़ (प्रतिशत)			
निर्यात	3.4	33.0	-31.2
तेल	2.4 *	27.2	..
तेल से भिन्न	7.4 *	38.8	..
आयात	14.3	30.3	-38.0
तेल	16.9	73.3	-59.6
तेल से भिन्न	13.2	24.1	-25.0
सं: संशोधित अ: अनंतिम			
* : अप्रैल-फरवरी .. : उपलब्ध नहीं			
स्रोत : वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।			

ऋणात्मक वृद्धि चौथी तिमाही में और अधिक बढ़ गई (-24.2 प्रतिशत); लेकिन, आयात वृद्धि लगभग सात वर्षों के अंतराल के पश्चात इसी तिमाही के दौरान ऋणात्मक (-27.3 प्रतिशत) हो गई, जो मुख्य रूप से कमजोर घरेलू आर्थिक गतिविधियों को दर्शाते हुए कच्चे तेल के कम मूल्य और तेलेतर आयात के कम होने से प्रेरित थी। परिणाम के रूप में, व्यापार घाटा 2008-09 की चौथी तिमाही के दौरान कम हो गया (सारणी 21)।

अदृश्य मदें

III.14 सकल अदृश्य मदों संबंधी प्राप्तियों और भुगतानों में, जो 2008-09 की तीसरी तिमाही के दौरान काफी अधिक कम हो गये थे, चौथी तिमाही के दौरान

ऋणात्मक वृद्धि हुई, जो वैश्विक मंदी के प्रभाव को दर्शाती है (सारणी 22)। 2008-09 की चौथी तिमाही के दौरान अदृश्य मद प्राप्तियों में कमी सभी तीन प्रमुख शीर्षों अर्थात् सेवाओं, निजी अंतरणों और निवेश आय में गिरावट के कारण थी। इसके बावजूद, कुल मिलाकर वर्ष के दौरान, अदृश्य मद प्राप्तियों में धनात्मक वृद्धि हुई, जिसे मुख्य रूप से सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात और निजी अंतरण प्राप्तियों से समर्थन मिला। 2008-09 की चौथी तिमाही के दौरान अदृश्य मद भुगतानों में तीव्र गिरावट हुई, जो परिवहन के अंतर्गत भुगतानों, सॉफ्टवेयर सेवाओं, और वित्तीय सेवा खातों में काफी अधिक कमी से प्रेरित थी। कुल मिलाकर वर्ष में, अदृश्य मद भुगतानों में मामूली ऋणात्मक वृद्धि दिखी। परिणाम

सारणी 21 : भारत का भुगतान संतुलन

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	अप्रैल-मार्च		2007-08 आं.सं. जन.-मार्च	2008-09 प्रा.			
	2007-08 आं.सं.	2008-09 प्रा.		अप्रैल-जून	जुला-सितं	अक्तू-दिसं	जन-मार्च
1	2	3	4	5	6	7	8
1. निर्यात	166.2	175.2	52.5	49.1	49.0	37.3	39.8
2. आयात	257.8	294.6	74.9	80.5	87.7	72.0	54.4
3. व्यापार संतुलन (1-2)	-91.6	-119.4	-22.3	-31.4	-38.7	-34.7	-14.6
4. निवल अदृश्य मदें	74.6	89.6	20.8	22.4	26.2	21.7	19.3
5. चालू खाता शेष (3+4)	-17.0	-29.8	-1.5	-9.0	-12.5	-13.0	4.7
6. सकल पूंजी अंतर्वाह	433.0	302.5	141.2	90.9	85.0	69.5	57.1
7. सकल पूंजी बहिर्वाह	325.0	293.3	115.2	79.7	77.5	73.7	62.4
8. निवल पूंजी खाता (6-7)	108.0	9.1	26.0	11.1	7.6	-4.3	-5.3
9. समग्र संतुलन (5+8)#	92.2	-20.1	25.0	2.2	-4.7	-17.9	0.3
ज्ञापन:							
i. निर्यात वृद्धि (प्रतिशत)	28.9	5.4	47.2	43.0	28.0	-9.1	-24.2
ii. आयात वृद्धि (प्रतिशत)	35.2	14.3	55.8	42.9	47.3	7.3	-27.3
iii. व्यापार संतुलन (जीडीपी के प्रतिशत के रूप में)	-7.8	-10.3					
iv. अदृश्य मदों की प्राप्तियों में वृद्धि (%)	29.7	9.4	28.8	30.3	34.3	1.8	-16.6
v. अदृश्य मदों के भुगतान में वृद्धि (%)	18.7	-1.4	31.9	13.5	14.4	3.1	-24.7
vi. जीडीपी के % की तुलना में चालू खाता घाटा (सीएडी)		1.5	2.6				
vii. विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि (मार्च के अंत में)	309.7	251.7					

: समग्र शेष में मद 5 और 8 के अलावा भूल चूक भी शामिल है।

आं.सं.: आंशिक संशोधन प्रा.: प्रारंभिक सीएडी: चालू खाता घाटा।

सारणी 22: सकल अदृश्य मदों की प्राप्तियां तथा भुगतान

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	अदृश्य मदों की प्राप्तियां				अदृश्य मदों के भुगतान			
	अप्रैल - मार्च		जनवरी-मार्च		अप्रैल - मार्च		जनवरी-मार्च	
	2007-08 आं.सं.	2008-09 प्रा.	2007-08 आं.सं.	2008-09 प्रा.	2007-08 आं.सं.	2008-09 प्रा.	2007-08 आं.सं.	2008-09 प्रा.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. यात्रा	11.3	10.9	3.6	2.7	9.3	9.4	2.8	2.6
2. परिवहन	10.0	11.1	3.2	2.9	11.5	12.8	3.4	2.5
3. बीमा	1.6	1.4	0.5	0.3	1.0	1.1	0.3	0.3
4. सरकारें जो अन्यत्र शामिल न की गई हों।	0.3	0.4	0.08	0.08	0.4	0.8	0.06	0.4
5. विविध	66.7	77.5	18.6	18.2	30.3	27.3	11.9	7.5
जिसमें से:								
सॉफ्टवेयर	40.3	47.0	12.8	11.2	3.1	2.8	0.7	0.5
सॉफ्टवेयर से इतर	26.4	30.5	5.8	7.0	27.3	24.5	11.1	7.0
6. अंतरण	44.3	47.0	14.5	10.0	2.3	2.7	1.0	0.4
जिसमें से:								
निजी अंतरण	43.5	46.4	14.2	9.8	1.8	2.3	0.9	0.3
7. आय	14.3	14.3	4.7	3.4	19.2	18.8	4.9	4.6
निवेश आय	13.8	13.5	4.5	3.2	18.1	17.5	4.6	4.3
कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	0.5	0.8	0.2	0.2	1.1	1.3	0.3	0.3
कुल (1 से 7)	148.6	162.6	45.2	37.7	74.0	73.0	24.3	18.3
प्रा. प्रारंभिक	आं.सं.: आंशिक संशोधन							

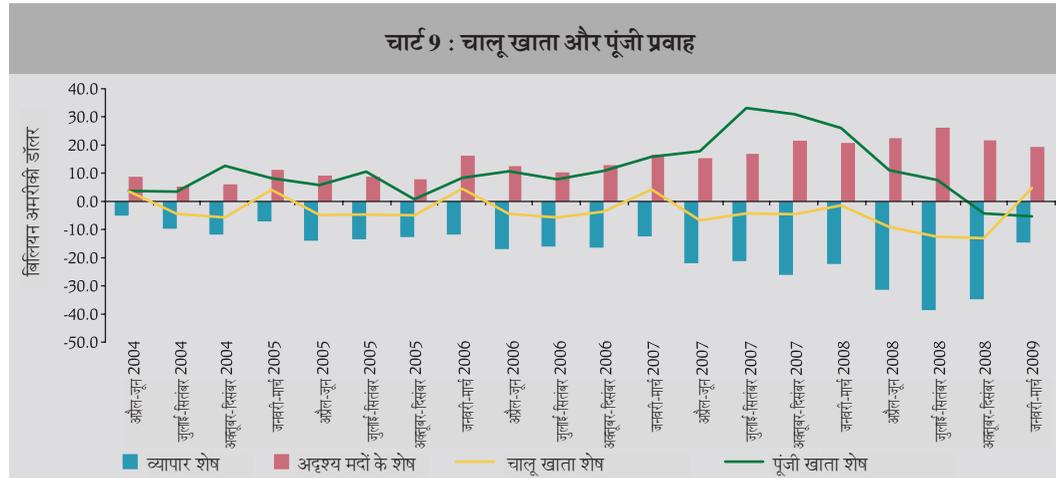
के रूप में, निवल अदृश्य मदों (अर्थात् अदृश्य मद प्राप्ति - भुगतान) में एक वर्ष पहले के स्तर से (जीडीपी का 6.4 प्रतिशत) 2008-09 के दौरान सुधार (जीडीपी का 7.7 प्रतिशत) दिखा, जो मुख्य रूप से निजी अंतरणों और सॉफ्टवेयर सेवाओं के अंतर्गत उच्च प्राप्तियों के कारण संभव हुआ। इस स्तर पर, अदृश्य मद अधिशेष ने 2008-09 के दौरान व्यापार घाटे का लगभग 75.0 प्रतिशत वित्तीयन किया जबकि 2007-08 की दौरान यह 81.4 प्रतिशत था।

III.15 निरंतर अदृश्य मद अधिशेष के साथ-साथ निर्यात के सापेक्षिक आयात में काफी अधिक कमी के कारण, लगातार सात तिमाहियों में घाटा दर्ज करने के पश्चात निम्नतर व्यापार घाटे का परिणाम चालू खाते में अप्रत्याशित वृद्धि से 2008-09 की चौथी तिमाही में मामूली अधिशेष के रूप में हुआ (चार्ट 9)। कुल मिलाकर

वर्ष के लिए, विशाल व्यापार घाटे के कारण मुख्य रूप से वर्ष की पहली तीन तिमाहियों में निर्यात के सापेक्षिक आयात में उच्च वृद्धि के चलते, 2007-08 के 17.0 बिलियन अमरीकी डॉलर (जीडीपी का 1.5 प्रतिशत) की तुलना में 2008-09 के दौरान 29.8 बिलियन अमरीकी डॉलर (जीडीपी का 2.6 प्रतिशत) का उच्च चालू खाता घाटा हुआ।

पूंजी खाता

III.16 सितंबर 2008 के पश्चात उन्त वित्तीय बाजारों में व्यापक डिलीवरेजिंग को दर्शाते हुए, 2008-09 की तीसरी तिमाही में शुरू हुआ पूंजी खाते का दबाव चौथी तिमाही में भी जारी रहा। यह दबाव कम अंतर्वाह और अधिक बहिर्वाह के रूप में दिखा, जिसका फल 2008-09 की दो अंतिम तिमाहियों में निवल बहिर्वाह रहा। पूंजी बहिर्वाह मुख्य रूप से निवेश पोर्टफोलियो, बैंकिंग पूंजी और



अल्पकालिक व्यापार ऋण के अंतर्गत व्यापक बहिर्वाहों से प्रेरित थे। अंतरराष्ट्रीय निवेश की ओर से बढ़ती जोखिम के प्रति अरुचि और विदेशी ऋण बाजार में तंगी, जिसने पूंजी प्रवाह के अन्य प्रकारों को प्रभावित किया, के बावजूद विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआइ) के अंतर्गत अंतर्वाहों और अनिवासी भारतीय (एनआरआइ) जमाओं में नमनीयता दिखी जो एक दीर्घकालिक निवेश गंतव्य के रूप में भारत के प्रति जारी आकर्षण और वैश्विक वित्तीय संकट के अनुसरण में अंतर्वाहों के कुछ प्रकारों में सुधार के लिए किए गए विभिन्न नीतिगत उपायों के सकारात्मक प्रभाव में भी परिलक्षित होता है। इस पर भी ध्यान देना महत्वपूर्ण होगा कि निवल पूंजी प्रवाह 2007-08 के 108.0 बिलियन अमरीकी डॉलर से घटकर 2008-09 में 9.1 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गये (सारणी 23)।

III.17 घटक वार, 2008-09 के दौरान भारत के प्रति निवल आवक एफडीआइ प्रवाह अधिक बने रहे, जो भारत की दीर्घकालिक वृद्धि की संभावनाओं में विश्वास और सापेक्षिक रूप से भारत में बेहतर निवेश वातावरण, जो एफडीआइ को आकर्षित करने के लिए क्रमिक उदारिकरण उपायों के द्वारा उत्पन्न किया गया है, को दर्शाता है। 2008-09 के दौरान भारत के प्रति एफडीआइ मुख्य रूप से

विनिर्माण क्षेत्र (21.1 प्रतिशत) में आए, इसके पश्चात वित्तीय क्षेत्र (19.4 प्रतिशत) और निर्माण क्षेत्र (9.9 प्रतिशत) थे। वैश्विक मंदी के गंभीर होने के बावजूद, 2008-09 के दौरान भारतीय कंपनियों द्वारा विदेशी निवेश अधिक बना रहा, जो संकट के कारण आस्तियों के कम मूल्यन के अलावा, भारतीय कंपनियों के द्वारा किफायत बरतने, प्रौद्योगिकी के प्रति बेहतर पहुंच रखने और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए ऑफशोर मार्केट में पहुंचने के उद्देश्य को दर्शाता है।

III.18 पोर्टफोलियो निवेश में, जिसमें मुख्य रूप से भारतीय पूंजी बाजार में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा निवेश और अमरीकी निक्षेपागार रसीदों (एडीआर)/ वैश्विक निक्षेपागार रसीदों (जीडीआर) का निर्गम शामिल है, 2008-09 के दौरान भारतीय शेयर बाजार में एफआइआइ द्वारा इक्विटी की व्यापक बिक्री के कारण विशाल निवल बहिर्वाह दिखा, जो मंदड़िया बाजार दशाओं और वैश्विक अर्थव्यवस्था में गिरावट को दर्शाता है और यह विश्वभर में डिलीवरेजिंग तथा सुरक्षा की ओर भागने की चिंता से भी प्रोत्साहित था। 2008-09 में निवल बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) अंतर्प्रवाह भी कम हो गये क्योंकि भारत के प्रति ईसीबी के अंतर्गत संवितरण पिछले वर्ष के

सारणी 23 : निवल पूंजी प्रवाह

(मिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	अप्रैल - मार्च		2007-08 आसं	2008-09 प्रा.			
	2007-08 आं.सं.	2008-09 प्रा.	जन-मार्च	अप्रैल-जून	जुलाई-सितं.	अक्तू-दिसं.	जन.-मार्च
1	2	3	4	5	6	7	8
1. विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआइ)	15.4	17.5	8.5	9.0	4.9	0.4	3.2
अंतर्वाह एफडीआइ	34.2	35.0	14.2	11.9	8.8	6.3	8.0
बहिर्वाह एफडीआइ	18.8	17.5	5.7	2.9	3.9	5.9	4.8
2. संविभागीय निवेश	29.6	-14.0	-3.7	-4.2	-1.3	-5.8	-2.7
जिसमें से:							
विदेशी संस्थागत निवेशक	20.3	-15.0	-4.1	-5.2	-1.4	-5.8	-2.6
एडीआर / जीडीआर	8.8	1.2	0.4	1.0	0.1	0.0	0.02
3. बाह्य सहायता	2.1	2.6	0.8	0.4	0.5	1.0	0.8
4. बाह्य वाणिज्यिक उधार	22.6	8.2	5.2	1.5	1.7	3.9	1.1
5. अनिवासी भारतीयों की जमाराशियां	0.2	4.3	1.1	0.8	0.3	1.0	2.2
6. अनिवासी भारतीयों की जमाराशियों को छोड़कर बैंकिंग पूंजी	11.6	-7.7	4.7	1.9	1.9	-6.0	-5.4
7. अल्पावधि व्यापार ऋण	17.2	-5.8	6.5	2.4	1.3	-4.0	-5.5
8. रुपया ऋण सेवाएं	-0.1	-0.1	-0.08	-0.03	-	-	-0.07
9. अन्य पूंजी	9.5	4.2	3.0	-0.5	-1.6	5.2	1.1
कुल (1 से 9)	108.0	9.1	26.0	11.1	7.6	-4.3	-5.3

प्रा: प्रारंभिक

आंसं: आंशिक संशोधन

स्तर से आधे से भी अधिक हो गये जो उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में ऋण फ्रीज करने के प्रेषण आघातों को परिलक्षित करता है। ऐसी जमाओं पर ब्याज दरों की सीमा में वृद्धि के अनुसरण में एनआरआई जमाओं के अंतर्गत उच्च निवल अंतर्वाहों के बावजूद, 2008-09 के दौरान बैंकिंग पूंजी प्रवाह ऋणात्मक हो गये, मुख्य रूप से विदेशी उधारों के अंतर्गत बहिर्वाहों तथा वाणिज्यिक बैंकों की विदेशी आस्तियों के कारण।

III.19 2008-09 की दूसरी छमाही में वैश्विक ऋण बाजार में तंगी के कारण अल्पकालिक व्यापार ऋण की उपलब्धता संबंधी आशंकाओं के बावजूद, 2008-09 के दौरान सकल संवितरण 39.7 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया (2007-08 में 48.9 बिलियन अमरीकी डालर), जिसे विभिन्न नीतिगत उपायों से मदद मिली जैसे विभिन्न परिवक्वताओं वाले व्यापार ऋण के लिए समग्र लागत सीमा में वृद्धि, ऐसा अंतरराष्ट्रीय

बाजार में निधियों की लागत के अधिक होने के संदर्भ में आवश्यक था। इसलिए, कुछ मामलों में प्रचलित बाजार अनुभव के विपरीत अल्पकालिक व्यापार ऋण के वित्तीयन ने भारत में कोई बड़ी समस्या नहीं उत्पन्न की।

III.20 वैश्विक वित्तीय बाजार में जारी दबाव के बावजूद, पूंजी खाते के कुछ संकेतकों पर उपलब्ध नवीनतम जानकारी भारत की ओर पूंजी प्रवाह में एक नई तेजी आने की ओर संकेत करती है (सारणी 24)। इसके लिए विभिन्न राजकोषीय और मौद्रिक प्रोत्साहन उपायों तथा भारत की वृद्धि संभावनाओं के बारे में वैश्विक निवेशकों के सकारात्मक अनुभवों की पृष्ठभूमि में 2008-09 के दौरान सापेक्षिक रूप से भारत के बेहतर समष्टि आर्थिक निष्पादन को उत्तरदायी माना जा सकता है। जोखिम लेने की क्षमता में वैश्विक सुधार से विश्वभर के शेयर बाजारों में करेक्शन दिखायी दिया जिसने भारतीय शेयर बाजार में अधिक अंतर्वाहों को सुगम बनाया।

सारणी 24: 2009-10 में अभी तक का पूंजी प्रवाह

(बिलियन अमरीकी डॉलर)			
घटक	अवधि	2008-09	2009-10
1	2	3	4
भारत को विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	अप्रैल-मई	7.7	4.4
विदेशी संस्थागत निवेशक (निवल)	अप्रैल - जुलाई*	-6.5	8.7
एडीआर / जीडीआर	अप्रैल - जून	1.0	-
ईसीबी अनुमोदन	अप्रैल - जून	4.1	2.7
एनआरआइ जमाराशियां (निवल)	अप्रैल - जून	0.8	1.9

* : जुलाई 17 तक - : नगण्य
 एफडीआइ : विदेशी प्रत्यक्ष निवेश
 एफआइआइ : विदेशी संस्थागत निवेश
 ईसीबी : बाह्य वाणिज्यिक उधार
 एनआरआइ : अनिवासी भारतीय
 एडीआर : अमरीकी निक्षेपागार रसीदें
 जीडीआर : वैश्विक निक्षेपागार रसीदें

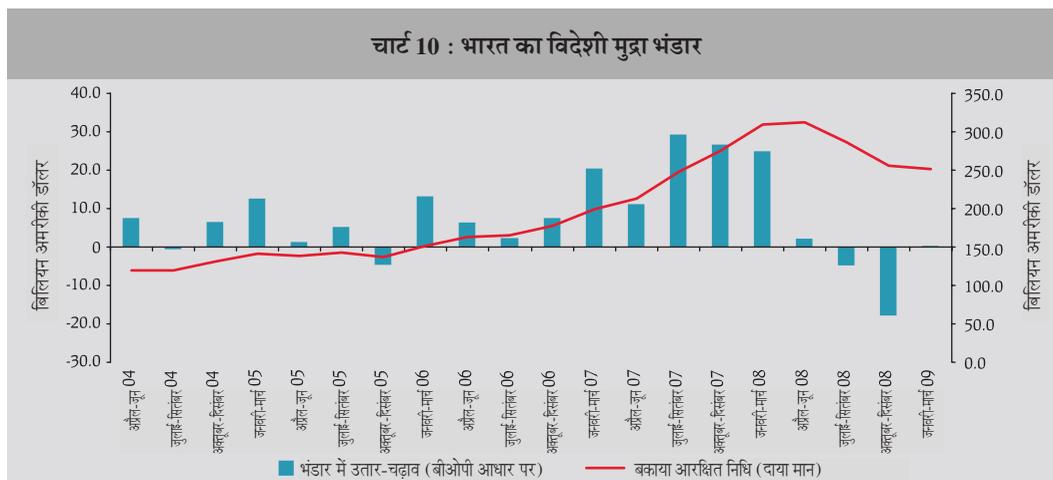
विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियां

III.21 2008-09 के दौरान भारत की विदेशी मुद्रा निधियां 58.0 बिलियन अमरीकी डालर घट गई, जो मार्च 2008 के अंत के 309.7 बिलियन अमरीकी डालर से घटकर मार्च 2009 के अंत में 251.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गयी। 58.0 बिलियन अमरीकी डालर की इस गिरावट में से, 37.9 बिलियन अमरीकी डालर मूल्यन परिवर्तन के कारण थे और 20.1 बिलियन

अमरीकी डालर भुगतान संतुलन में गिरावट आई जो बीओपी की वित्तीयन की आवश्यकता को दर्शाती है। इस प्रकार, भारत के बीओपी के अप्रत्याशित बाहरी आघात के प्रभाव का प्रबंधन बिना किसी असाधारण उपाय का सहारा लिए केवल 20.1 बिलियन अमरीकी डालर की रिजर्व हानि से किया गया। वास्तव में पूंजी खाते को कुछ क्षेत्रों जैसे जावक एफडीआइ और एफसीसीबी की पुर्नखरीद में और उदारीकृत बनाया गया। निवल पूंजी बहिर्वाहों के बावजूद, बीओपी आधार पर विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियां (अर्थात मूल्यन को छोड़कर) 2008-09 की चौथी तिमाही के दौरान मामूली रूप से 0.3 बिलियन अमरीकी डालर घटी, मुख्य रूप से चालू खाते में सामान्य अधिशेष होने के कारण। ऐसा 2008-09 की पिछली दो तिमाहियों में हुए आरक्षित निधियों के काफी अधिक आहरण के विपरीत था (चार्ट 10)।

III.22 तथापि, 2009-10 के दौरान अब तक पोर्टफोलियो प्रवाह के पूर्व रुझान के विपरीत होने और काफी अधिक धनात्मक होने के कारण, भारत की विदेशी मुद्रा निधियां जो मार्च 2009 के अंत में 251.7 बिलियन अमरीकी डालर घट गई थी, बाद में बढ़कर 17 जुलाई 2009 को 266.2 बिलियन अमरीकी डालर हो गई (सारणी 25)।

चार्ट 10 : भारत का विदेशी मुद्रा भंडार



सारणी 25 : विदेशी मुद्रा भंडार						
(मिलियन अम. डॉलर)						
माह के अंत में	स्वर्ण	एसडीआर	विदेशी मुद्रा आस्तियां*	अंमुको में भंडार की स्थिति	कुल (2+3+4+5)	ज्ञापन: माह के अंत में रिज़र्व बैंक द्वारा अमरीकी डॉलर की निवल फॉरवर्ड बिक्री (-) / क्रय (+) बकाया
1	2	3	4	5	6	7
मार्च 2000	2,974	4	35,058	658	38,694	(-) 675
मार्च 2005	4,500	5	135,571	1,438	141,514	-
मार्च 2006	5,755	3	145,108	756	151,622	-
मार्च 2007	6,784	2	191,924	469	199,179	-
मार्च 2008	10,039	18	299,230	436	309,723	(+) 14,735
मार्च 2009	9,577	1	241,176	981	251,735	(-) 2,042
अप्रैल 2009	9,231	1	241,487	983	251,702	(-) 1,071
मई 2009	9,604	1	251,456	1,245	262,306	(+) 131
जून 2009	9,800	1	254,093	1,248	265,142	-
जुलाई 2009#	9,800	1	255,138	1,248	266,187	-

* : इसमें 20 मार्च 2009 से आइआइएफसी (यूके) द्वारा जारी विदेशी मुद्रा डिनोमिनेटेड बांडों में निवेश किए गए 250 मिलियन अमरीकी डॉलर की राशि शामिल नहीं की गई है।
: 17 जुलाई 2009 को - : उपलब्ध नहीं

बाह्य ऋण

III.23 2008-09 के दौरान, भारत का बाह्य ऋण 5.3 बिलियन अमरीकी डॉलर (2.4 प्रतिशत) से बढ़कर मार्च 2008 के अंत के स्तर की तुलना में मार्च 2009 के अंत में 229.9 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया (सारणी 26)। 2008-09 के दौरान बाह्य ऋण स्टॉक में वृद्धि अनिवार्य रूप से व्यापार ऋणों में वृद्धि के कारण थी। मार्च 2009 के अंत में दीर्घकालिक ऋण बढ़कर 2.9 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया, मुख्य रूप से क्रेता ऋण में वृद्धि के कारण। वर्ष के दौरान एनआरआई जमाराशियां 2.1 बिलियन अमरीकी डॉलर घटीं जो मूल्यन परिवर्तन को दर्शाती हैं। मार्च 2009 के अंत में अमरीकी डॉलर में मूल्यवर्गित ऋण कुल बाह्य ऋण का 57.1 प्रतिशत था।

III.24 मार्च 2009 के अंत में ऋण निरंतरता संकेतक सुविधाजनक स्तर पर बने रहे। ऋण चुकौती अनुपात,

जो वर्षों के दौरान लगातार घट रहा था, मार्च 2009 के अंत में 4.6 प्रतिशत था। कुल ऋण की तुलना में अल्पकालिक अनुपात मार्च 2008 के अंत के 20.9 प्रतिशत से मामूली रूप से बढ़कर मार्च 2009 के अंत में 21.5 प्रतिशत हो गया। इसके अलावा, विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों की तुलना में अल्पकालिक ऋण अनुपात उपर्युक्त अवधि के 15.2 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर 19.6 प्रतिशत हो गया। भारत की विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों ने मार्च 2009 के अंत में बाह्य ऋण स्टॉक को 109.6 प्रतिशत का कवर प्रदान किया (मार्च 2009 के अंत में 137.9 प्रतिशत)।

III.25 अवशिष्ट परिपक्वता के आधार पर, मार्च 2009 के अंत में अल्पकालिक ऋण कुल बकाया बाह्य ऋण का 40.6 प्रतिशत था। मार्च 2009 के अंत की अवशिष्ट परिपक्वता (93.3 बिलियन अमरीकी डॉलर) के

सारणी 26 : भारत का बाह्य ऋण				
(बिलियन अमरीकी डॉलर)				
मद	मार्च 2008 के अंत में	मार्च 2009 के अंत में अ	घटबढ़ 2008-09	
			राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5
1. बहुपक्षीय	39.5	39.6	0.1	0.2
2. द्विपक्षीय	19.7	20.6	0.9	4.5
3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष	0.0	0.0	0.0	0.0
4. व्यापार ऋण (1 वर्ष से अधिक)	10.4	14.6	4.2	41.0
5. बाह्य वाणिज्यिक उधार	62.3	62.7	0.3	0.5
6. अनिवासी भारतीय जजमाराशि	43.7	41.6	-2.1	-4.8
7. रुपया ऋण	2.0	1.5	-0.5	-24.3
8. दीर्घावधि (1 से 7)	177.6	180.5	2.9	1.7
9. अल्पावधि	49.4	2.4	5.1	
कुल (8+9)	224.6	229.9	5.3	2.4
<i>जापन:</i> (प्रतिशत)				
कुल ऋण / जीडीपी	19.0	22.0		
अल्पावधि ऋण / कुल ऋण	20.9	21.5		
अल्पावधि ऋण / भंडार	15.2	19.6		
रियायती ऋण / कुल ऋण	19.7	18.2		
भंडार / कुल ऋण	137.9	109.6		
ऋण चुकौती अनुपात	4.8	4.6		
अ: अर्नातिम				

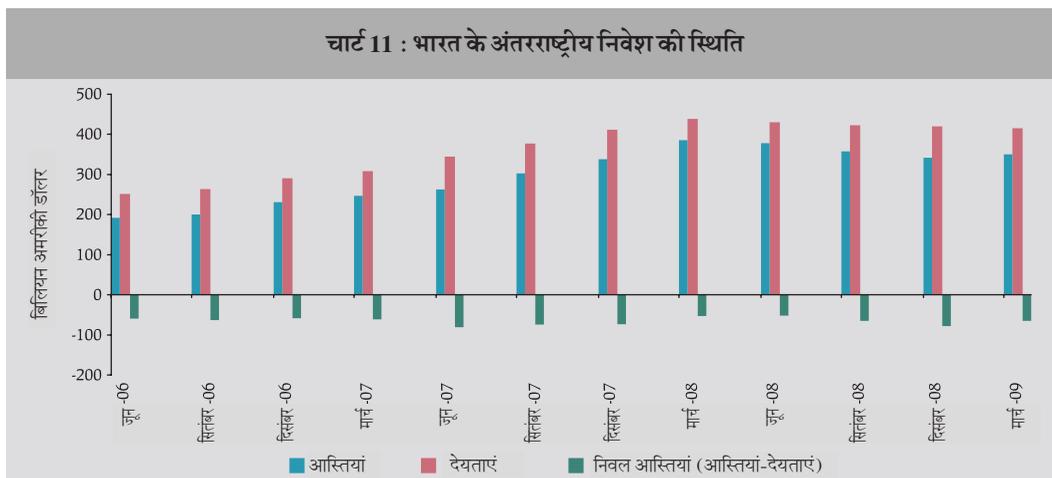
अनुसार, कुल अल्पकालिक ऋण में 49.4 बिलियन अमरीकी डालर की मूल परिपक्वता पर आधारित अल्पकालिक ऋण और 43.9 बिलियन अमरीकी डालर के एक वर्ष के अंतर्गत चुकौती के लिए बकाया दीर्घकालिक बाह्य ऋण शामिल हैं। 43.9 बिलियन अमरीकी डालर में से, एनआरआई जमाओं का प्रमुख हिस्सा है (32.1 बिलियन अमरीकी डालर), जिसके पिछले रुझानों को देखते हुए और अधिक बढ़ने की संभावना है।

अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति

III.26 2008-09 के दौरान, भारत की निवल अंतरराष्ट्रीय देयताएं (अर्थात् सकल देयताओं से घटाई सकल आस्तियां) 12.5 बिलियन अमरीकी डालर बढ़कर मार्च 2009 के अंत में 65.3 बिलियन अमरीकी डालर

हो गयी, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय देयताओं में गिरावट अंतरराष्ट्रीय आस्तियों की तुलना में अधिक थी (चार्ट 11)। अंतरराष्ट्रीय आस्तियों में गिरावट मुख्य रूप से रिजर्व आस्तियों में कमी के कारण थी, ये रिजर्व आस्तियां 57.7 बिलियन अमरीकी डालर थीं। अंतरराष्ट्रीय देयताओं में गिरावट के लिए मुख्य रूप से फोर्टपोलिओ इक्विटी निवेश के अंतर्गत एफआईआई के बहिर्वाहों को उत्तरदायी माना जा सकता है। तिमाही-वार विश्लेषण दर्शाते हैं कि अंतरराष्ट्रीय देयताओं में गिरावट के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय आस्तियों में वृद्धि के कारण पिछली तिमाही की तुलना में 2008-09 की चौथी तिमाही के दौरान निवल अंतरराष्ट्रीय देयताओं में 13.2 बिलियन अमरीकी डालर की कमी आई। अंतरराष्ट्रीय आस्तियों में वृद्धि मुख्य रूप से विदेश में प्रत्यक्ष निवेश और व्यापार ऋण के अंतर्गत अन्य निवेश तथा मुद्रा और जमाओं

चार्ट 11 : भारत के अंतरराष्ट्रीय निवेश की स्थिति



में योगदान के करण थी। जनवरी-मार्च 2009 के दौरान पोर्टपोलिओ इक्विटी निवेश से एफआइआइ द्वारा बहिर्वाह और मूल्यन परिवर्तन के प्रभाव ने पिछली तिमाही की तुलना में 2008-09 की चौथी तिमाही में अंतरराष्ट्रीय देयताओं की गिरावट में योगदान दिया।

III.27 इस प्रकार, भारत का भुगतान संतुलन लगातार लचीलापन दर्शा रहा है और वैश्विक आर्थिक गिरावट के मंदीकारी प्रभाव तथा व्यापार में संकुचन का बिना किसी असाधारण उपाय का सहारा लिए प्रबंधन किया गया।

निरंतर अदृश्य मदों के अधिशेष के साथ-साथ निर्यात की तुलना में आयात में व्यापक गिरावट के कारण कम होते व्यापार घाटे का परिणाम चालू खाते में अप्रत्याशित सुधार के रूप में दिखा, जिससे 2008-09 की चौथी तिमाही के दौरान अधिदेश की स्थिति रही। पूँजी खाते पर दबाव 2008-09 की चौथी तिमाही के दौरान भी जारी रहा तथा परिणाम के रूप में वर्ष के दौरान कुल मिलाकर पूँजी प्रवाह में स्पष्ट गिरावट दिखा। 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान पूँजी अंतर्वाहों में एक नई जान आई जबकि निर्यात और आयात में संकुचन जारी रहा।